
SvAmivashyakari Shatruvidhvamsini Stotram

स्वामिवश्यकरी शत्रुविध्वंसिनी स्तोत्रम्

Document Information

Text title : svAmivashyakarI shatruvidhvaMsinI bhagavatI vaiShNavI stotram

File name : shatruvidhvaMsinIstotram.itx

Category : devii, durgA

Location : doc_devii

Transliterated by : Mohan Chettoor

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : July 4, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

July 4, 2022

sanskritdocuments.org

SvAmivashyakari Shatruvidhvamsini Stotram

स्वामिवश्यकरी शत्रुविध्वंसिनी स्तोत्रम्



भगवती वैष्णवी स्तोत्रम्

विनियोगः -

ॐ अस्य श्री स्वामिवश्यकरी शत्रुविध्वंसिनी स्तोत्रमन्त्रस्य पिप्पलायन
ऋषि अनुष्टुप् छन्दः श्रीरामचन्द्रो देवता मम स्वामिप्रीत्यर्थं मत्
सकाशात् शत्रोः पिशायवत् पलायनार्थं जपे विनियोगः ।

षड्गुण्यास -

- ॐ रां अनुष्ठाभ्यां नमः ।
- ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
- ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः ।
- ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः ।
- ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
- ॐ रः अस्त्राय कृट् ॥

ध्यानम् ।

ॐ कालाम्बोधर कान्तिकायमनसं वीरासनाध्यासितं
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरां उस्ताम्बुजे जनुनी ।
सीतां पार्श्वगतां शिरोरुडकरां विद्युन्निभं राघवं
पश्यन्तीं मुकुटे गदादिविधं कल्पोज्ज्वलाङ्गीं भजे ॥

विभीषण उवाच ।

ॐ स्वामिवश्यकरी देवी प्रीतिवृद्धिकरी मम ।
शत्रुविध्वंसिनी रौद्री त्रिशिरा सा विलोचनी ॥ १ ॥

अग्निज्वाला रौद्रमुष्ठी घोरदंष्ट्रा त्रिशूलिनी ।
द्विगम्बरी मुक्तकेशी रत्नपाणिर्मंडोदरी ॥ २ ॥

अकराड् वैष्णवी घोरे शत्रुमुद्दिश्य ते विषम् ।
प्रभुमुद्दिश्य पीयूषं प्रसादादस्तु ते सदा ॥ ३ ॥

मन्त्रमेतज्जपेन्नित्यं विजयं शत्रुनाशनम् ।

स्वामिप्रीत्यभिवृद्धिर्लिं जपात्तस्य न संशयः ॥ ४ ॥

सहस्रं त्रितयं कृत्वा कार्यसिद्धिर्भविष्यति ।

जपाद्दशांशतो लोभः सर्षपैस्तन्दुलैः धृतैः ॥ ५ ॥


पञ्चभाद्ययुतैर्दुत्वा स्वामिवश्यकरी तथा ।

ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चादात्माभीष्ट इवप्रदः ॥ ६ ॥


॥ एति स्वामिवश्यकरी शत्रुविध्वंसिनी अथवा भगवती वैष्णवी स्तोत्रम् ॥

यदि स्वामी क्रोधी, दुष्ट, दुराचारी व लोभी होवे, दुर्विचार वाला हो
उसको दण्ड देकर अपने अनुकूल करने के लिये भगवती वैष्णवी के
एस स्तोत्र का जप करना चाहिए । सहस्रावृत्ति हेतु श्लोक १ से ३ की
आवृत्तियां करे । श्लोक ४ से ६ श्लोक महात्म भाण्ड के हैं जो अन्तिम
बार पढ़े । विभीषण द्वारा की गई भगवती की यह स्तुति श्रीराम
की भक्ति करने तथा उनकी अनुकम्पा प्राप्त करने के लिये की गई थी ।

Encoded and proofread by Mohan Chettoor

——
SvAmivashyakari Shatruvidhvamsini Stotram

pdf was typeset on July 4, 2022

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

